# चतुर्थ अध्याय

## " 'परिशिष्ट' उपन्यास में चित्रित शिक्षा व्यवस्था"

# चतुर्थ अध्याय

## " 'परिशिष्ट' उपन्यास में चित्रित शिक्षा व्यवस्था"

### प्रस्तावना :

मानव समाज को प्रगति की ओर ले जानेवाला महत्वपूर्ण साधन है-शिक्षा। मनुष्य के सर्वांगीण विकास में शिक्षा का स्थान महत्वपूर्ण रहता है। अर्थात जीवन के विकास में शिक्षा की भूमिका अनिवार्य है। शिक्षाहीन व्यक्ति बिल्कुल उस मुसाफिर की तरह है जिसे अपनी मंजिल का पता नहीं होता। अशिक्षित व्यक्ति अपने जीवन में अपना इच्छित ध्येय प्राप्त नहीं कर सकता। क्योंकि शिक्षा ही इन्सान का मार्गदर्शन तथा रास्ता निर्देशित करने का काम करती है। किसी भी समाज की सभ्यता एवं संस्कृति उस देश की शिक्षा व्यवस्था पर आधारित होती है। जनता के लिए सुयोग्य शिक्षा की व्यवस्था होने से लोग सुसंस्कारित होते हैं।

### 4.1 शिक्षा व्यवस्था

#### 4.1.1 शिक्षा का अर्थ

"संस्कृत में शिक्ष् धातू से उत्पन्न शिक्षा शब्द का भारतीय साहित्य में अर्थ है सिखाना या ज्ञान देना।"[1] गुरू और शिष्य के बीच ज्ञान देने और लेने की प्रक्रिया निरंतर चलती है। शिक्षा से मनुष्य को वह ज्ञान प्राप्ति होती है जिससे उसकी अव्यवस्थितता और पाशविकता नष्ट होकर मानवता जागृत होती है।

'मानक हिंदी शब्दकोश' में शिक्षा का अर्थ है - "विधा पढ़ाने या सीखाने की क्रिया, तालीम (एज्युकेशन); उपदेश, नसीहत; एक वेदांग जिसमें वेदों के वर्गो, स्वरों, मात्राओं आदि का विवेचन है (आरथोग्राफी); सबक, पाठ; सलाह।"[2] शिक्षा के इसी अर्थ की पुष्टि मिलती है 'डायमंड हिंदी शब्दकोश' में शिक्षा का अर्थ है - "किसी

1. पी.लक्ष्मिकुबट्टि अम्मा - शिक्षा शिक्षण, पृष्ठ - 16
2. डॉ. शिवप्रसाद शास्त्री - मानक हिंदी-हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ - 957

विधा को सीखने या सीखाने की क्रिया; प्राप्त ज्ञान या विधा; प्रशिक्षण; उपदेश, नसीहत, सबक; दंड; छह वेदांगों में से एक।"[1] 'शिक्षक हिंदी शब्दकोश' में शिक्षा का अर्थ है - "विधा, ज्ञान, नसीहत, उपदेश, पाठ, सबक, दंड।"[2] 'संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर' में अर्थ है- " 1.किसी विधा को सीखने या सीखाने की क्रिया। सीख। तालिम। 2. गुरू के निकट विधा का अभ्यास। 3.उपदेश। मंत्र।सलाह। 4.छ: वेदांगों में से एक जिसमें वेदों के वर्ण, स्वर, मात्रा आदि का निरूपण है। 5.शासन।दबाव 6.सबक दंड।"[3]

उपर्युक्त अर्थ देखने के पश्चात् यह स्पष्ट होता है कि 'शिक्षा' याने किसी को पढ़ाना या सीखाना, उपदेश या प्रशिक्षण देना। ज्ञान प्रदान करना।ज्ञान पाना।आदि शिक्षा को लेकर अर्थ प्राप्त होते हैं।

**4.1.2 व्यवस्था का अर्थ :**

'मानक हिंदी शब्दकोश' में व्यवस्था शब्द का अर्थ है - "शास्त्रों, नियमों आदि के द्वारा निश्चित या निर्धारित किसी कार्य का विधान जो उसके औचित्य का सूचक होता है (रूलिंग); चीजों को सजाकर या ठिकाणे से रखना या लगाना; कोई काम ठीक ढंग या उचित प्रकार से करने का आयोजन करना (अरेंजमेंट) प्रबंध,इंतजाम (मैनजमैंट); वह अवस्था जिसमें सब काम ठीक तरह से होते हैं। (आर्डर); सामने आया हुआ काम कर्तव्य भाव से पूरा करना (डिस्पोजल, डिस्पोजीशन)।"[4] व्यवस्था के इसी अर्थ को 'भाषा शब्दकोश' में पुष्टि दी है - "शास्त्रों के द्वारा किसी कार्य का निर्धारित या निश्चित विधान, निश्चित रीति-नीति (मॅनेजमेंट) पत्र (पु.) वह पत्र जिसमें किसी विषय की शास्त्रीय व्यवस्था लिखी हो। विधान या रीति-नीति बतलाना। प्रबंध, इन्तजाम, स्थिति, स्थिरता-वस्तुओं को सजाकर यथास्थान रखना।"[5] 'शिक्षक हिंदी शब्द

1. डॉ.गरिराज शरण अग्रवाल, डॉ.बलजित सिंह - डायमंड हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ - 797
2. सं. हरदेव बाहरी - शिक्षक हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ - 375
3. सं. रामचंद्र वर्मा - संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर, पृष्ठ - 823
4. डॉ शिवप्रसाद शास्त्री - मानक हिंदी - हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ -957
5. डॉ.रामचंद्र शुक्ल - भाषा शब्दकोश, पृष्ठ - 912

कोश' में व्यवस्था का अर्थ है -"1.इंतजाम, प्रबंध, 2.ढंग या तरीका, 3.स्थिरता, 4.दृढ़ता 5. अध्यवसाय, 6.विधान (जैसे सरकारी व्यवस्था)।"[1] 'संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर' में व्यवस्था का अर्थ है - "1.प्रबंध, इन्तजाम, 2.चीजों को सजाकर ठिकाण से रखना, 3.रखने या स्थित करने की क्रिया। किसी कार्य का वह विधान जो शास्त्रों आदि व्दारा निश्चित या निर्धारित हुआ हो।"[2]

उपर्युक्त अर्थ से स्पष्ट है कि 'व्यवस्था' याने शास्त्रों के आधार पर किसी कार्य का किया गया ऐसा नियोजन जिसकी रीति-नीति, कायदा-कानून निश्चित की गयी हो।

'शिक्षा' और 'व्यवस्था' के अलग-अलग अर्थ देखने के पश्चात् शिक्षा-व्यवस्था का समन्वित अर्थ इस प्रकार हो सकता है -निश्चित नियोजन करके रीति-नीति ठहराकर किसी को उपदेश या प्रशिक्षण देना, पढ़ाना या सिखाना। अत: स्पष्ट है कि शिक्षा व्यवस्था का क्षेत्र व्यापक है। परंपरा से आज तक यह व्यवस्था बनी रही ही।

## 4.2 प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था :

प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था की शूरूआत वैदिक काल से मानी जाती है। इस काल में शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती थी। इस समय समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन चार वर्णो में विभाजित था। कर्म के आधार पर बनी व्यवस्था आगे रूढ़ हुई और शिक्षा का अधिकार शूद्रों को छोड़कर अन्य वर्णो में ब्राह्मण समाज को अधिक दिया गया था। प्राचीन काल से लेकर 19 वी शती तक शूद्रों को शिक्षा का अधिकार ही नहीं था। इस वर्ग को शिक्षा से दूर ही रखा गया था। अत: शुरू से मनुष्य के कर्तव्य और गुणों पर वर्णो का निर्धारण होता नजर आता है, परंतु बाद में वर्ण, वंश, जन्म-जात के अनुसार निश्चित होने लगे। वैदिक काल में व्यक्ति के व्यक्तित्व को

1. सं. हरदेव बाहरी - शिक्षक हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ - 370
2. सं.रामचंद्र वर्मा - संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर, पृष्ठ - 912

महत्व था इसलिए शिक्षा का प्रारंभ पाँच साल के बाद होता था। प्राचीन काल में शिक्षा ग्रहण करने की विधि इस प्रकार थी -

**गर्भादान :**

इस विधि से छात्र का मन और शरीर शुद्‌ध करके उसे शिक्षा प्राप्त करने के लायक बनाया जाता था।

**उपनयन :**

इस संस्कार के बाद छात्र गुरु के साथ गुरु के घर में शिक्षा प्राप्त करने के लिए रहने जाता था।

**गुरुकुल पद्‌धति :**

उपनयन संस्कार होने के बाद छात्र गुरु के घर में शिक्षा प्राप्त करने के लिए चला जाता था। वहाँ छात्र गुरु के घर एक सदस्य बनकर रहता था। गुरुकुल नगर जीवन के शोर-शराबे से दूर वन में छोटी -छोटी कुटियों में होते थे। गुरुकुल का माहौल प्रसन्न तथा प्रदूषण विरहित होता था। ऐसे प्रसन्न वातावरण में छात्रों को संस्कारित करने का कार्य गुरु करते थे गुरु और छात्रों के संबंध पिता-पुत्र जैसे थे, छात्र के लिए गुरु भगवान से भी बढ़कर थे। गुरु-शिष्यों के बीच अपार प्यार, स्नेह, निष्ठा तथा अपनेपन का वातावरण था। छात्र एक दूसरे से मिलकर बंधुभाव से रहते थे। गुरुकुल के नियम छात्रों के लिए बंधनकारक थे। छात्रों को प्रात:काल में ही उठकर नैमित्तिक कर्म के बाद प्रार्थना के लिए उपस्थित रहना पड़ता था। भोजन के बाद अध्ययन, संध्या के समय व्यायाम होता था। सोने से पहले उस दिन में पढ़े पाठ को रटकर पक्का किया जाता था। वेद अध्ययन के आधार पर अध्येता को 'स्नातक', 'वस्तु', 'रूप्त' और 'आदित्य' कहा जाता था।

शिक्षा समाप्त होने के बाद समावर्तन विधि को संपन्न किया जाता था। समावर्तन का अर्थ है - घर जाना। इसी से सुखी, समृदध् तथा संपन्न जीवन गुजारने का उपदेश दिया जाता था। वैदिक काल में शिक्षा मुफ्त दी जाती थी। गुरु कभी छात्रों से

'गुरुदक्षणा' की अपेक्षा नहीं करते थे। शिक्षा समाप्ति के बाद छात्र श्रद्धापूर्वक गुरु को गुरुदक्षणा देते थे। छात्र जो कुछ देता उसका स्वीकार वे करते थे। बिना कुछ लाभ के अपेक्षा गुरु विद्यादान तथ शिक्षाप्रसार का कार्य करते थे। गुरु और शिष्यों में एक समान अंतर, गुरु के प्रति शिष्यों में आदर युक्त डर रहता था। गुरु के आदेश का पालन करना ही शिष्यों का लक्ष्य रहा करता था। प्राचीन काल की शिक्षा व्यवस्था में गुरु-शिष्यों के बीच किसी अन्य को कोई स्थान नहीं था।

## 4.3 मध्यकालीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था :

भारत में मुस्लिम शासन काल (1191 ई.से 1857 ई.) तक 650 सालों का रहा। यही काल मध्ययुग माना जाता है। "1175 ई. से मुहम्मद गौरी के प्रथम आक्रमण से लेकर 1526 ई. में मुघल साम्राज्य की स्थापना तक विभिन्न मुस्लिम शासकों ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों पर शासन किया था; उसमें से प्रत्येक शासक का प्रयास अपने साम्राज्य का अधिकाधिक विस्तार करने का रहा था।"[1] बाबर ने मुघल साम्राज्य की स्थापना की जिसका सन् 1857 ई. तक भारत में अस्तित्व रहा। बाद में अंग्रेजों ने भारत देश पर शासन किया। मुस्लिम बादशाह शिक्षा को पवित्र मानते थें, फिर भी शिक्षा का विकास इस काल में नहीं हुआ। इसके पीछे अन्य कारणों के साथ उनकी साम्राज्य विस्तार की लालसा थी। साम्राज्य विस्तार की आकांक्षा के कारण ही उनका शिक्षा व्यवस्था की ओर ध्यान नहीं गया।

मुस्लिम शासन के प्रारंभ से ही भारत में स्थित प्राचीन शिक्षा व्यवस्था लड़खड़ाने लगी। मुघलकाल तक आते -आते प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था के केंद्र नष्ट हो चुके थे। उसकी जगह मक्ताब, मदरसा जैसे शिक्षा केंद्रों ने तथा अरबी, फारसी भाषाओं ने ग्रहण की। मुस्लिम कालीन शासन पद्धति में शिक्षा व्यवस्था के दो स्तर थे - एक प्राथमिक शिक्षा और दो उच्च शिक्षा। प्राथमिक शिक्षा जिस स्थान पर दी जाती उसे

1. माणिक लाल गुप्ता - मध्यकालीन भारत का इतिहास, पृष्ठ -1

'मक्ताब' और उच्च शिक्षा जिस स्थान पर दी जाती उसे 'मदरसा' कहा जाता था। अत: स्पष्ट है कि मध्यकालीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था दो स्तरों में बट गयी थी। जिसका स्वरूप निम्न है -

**4.3.1 प्राथमिक शिक्षा :**

मध्यकाल में प्राथमिक शिक्षा के जो केंद्र थे उन्हें 'मक्ताब' कहा जाता था। 'मक्ताब' फारसी भाषा का शब्द है, इसका अर्थ है - 'लेखन कला सीखने का स्थान'। मक्ताब मस्जिद को जोड़कर ही होते थे क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य मुस्लिम धर्म का प्रचार -प्रसार करना था। मस्जिद पर ही मक्ताब की जिम्मेदारी थी। इस संदर्भ में पी.एल.रावत का मत है - "भारत में इस्लाम का प्रसार शिक्षा के माध्यम से किया गया। मक्तबों में बच्चों को प्रारंभ से कुरान पढ़ाया जाता था जिससे उन्हें इस्लाम के सिद्धांतो की जानकारी प्राप्त हों सके।"[1]

मक्ताब में प्रवेश करने के लिए हिंदू 'उपनयन' संस्कार की तरह 'बिसमिला खानी' समारोह किया जाता था। मक्ताब में मौखिक अध्यापन पद्धति थी और लेखन कला का भी उपयोग किया जाता था। मक्ताबों में वर्णमाला एवं धार्मिक विचारों, प्रार्थना आदि का ज्ञान छात्रों को दिया जाता था। मक्ताब में एक ही अध्यापक होता था। अध्ययन का समय सुबह -दोपहर - शाम को होता था। शिक्षा मुफ्त थी। अध्यापक के जीवनयापन की व्यवस्था समाज में स्थित दानशील, धनिक व्यक्ति करते थे। अत: स्पष्ट है कि मक्ताब की शिक्षा का उद्देश्य धार्मिक ही था। इस्लाम धर्म का प्रचार -प्रसार करना उसमें प्रमुख था। परिणामत: अधिकतर मुस्लिम लोगों में शिक्षा संबंधी अन्य विचारधारा कम मात्रा में पनपती रही।

**4.3.2 उच्च शिक्षा :**

मध्यकाल में उच्च शिक्षा 'मदरसा' में दी जाती थी। 'मदरसा' शब्द अरबी

1. माणिक लाल गुप्ता - मध्यकालीन भारत का इतिहास, पृष्ठ -176

भाषा के 'दरस' शब्द से उत्पन्न हुआ है। दरस का अर्थ है 'भाषण और व्याख्यान'। मक्ताब में प्राथमिक शिक्षा पूर्ण होने के बाद छात्र उच्च शिक्षा लेने के लिए मदरसा में दाखिल होता था। मक्ताब की तरह मदरसा भी मस्जिद से संबंधित थे। मदरसा में पढ़नेवाले छात्रों के लिए छात्रावास की व्यवस्था भी की जाती थी। छात्रावास में सभी सुविधाएँ थी। मदरसा के संचालन के लिए स्थानिय समिति होती थी। मदरसा के लिए तत्कालीन शासन के साथ धनिक, विद्या प्रेमी लोग भी मद्द करते थे। यहाँ 10-12 साल रहकर अध्ययन करना पड़ता था। व्याख्यान पद्धति से शिक्षा दी जाती थी इसलिए अध्यापन पद्धति मौखिक थी। मक्ताब की तरह मदरसा में भी धार्मिक शिक्षा दी जाती थी। इसके अतिरिक्त अरबी, व्याकरण, साहित्य, तर्कशास्त्र, दर्शनशास्त्र, गणित, ज्योतिष, भूगोल, कानून, चिकित्सा शास्त्र, कृषि आदि विषयों से छात्रों को अवगत किया जाता था। कोई नियोजित परीक्षा पद्धति नहीं थी। अध्यापक ही छात्र की योग्यता देखकर उसे अगली कक्षा में भेज देते थे। मदरसा का पाठ्यक्रम पूरा करनेवाले छात्रों को प्रमाणपत्र देकर उनका गौरव किया जाता था। साहित्य के छात्र को 'काबिल' धर्मशास्त्र के छात्र को 'आलिम' तर्कशास्त्र के छात्र को 'फाजिल' आदि उपाधियाँ प्रदान की जाती थीं। इस काल में अकबर ही ऐसे राजा थे जिन्होंने धार्मिक उदारता से शिक्षा का प्रसार किया। अन्य राजाओं ने शिक्षा की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। अत: शिक्षा की दृष्टि से इस काल को अंधकारमय कहना गलत नहीं होगा।

### 4.4 आधुनिक भारतीय शिक्षा व्यवस्था :

भारत में अंग्रेजी सत्ता से पूर्व हिंदू और मुस्लिमों के देशी स्कूल थे किंतु भारत की यह शिक्षा व्यवस्था जीर्ण-शीर्ण तथा अनुपयोगी थी। जो बाते कुराण या पोथी-पुरानों में लिखी थीं, लोग उनसे ही अवगत होते थे। विद्वानों में नयी बात या नया ज्ञान प्राप्ति का प्रयास न के बराबर था। मुगलों के शासन काल में राजव्यवस्था की भाषा फारसी थी। वहीं अंग्रेजों के कंपनी सरकार की राजभाषा बनी।उस समय फारसी में शिक्षित लोग मिल जाते थे। इसलिए प्रारंभ में कंपनी ने शिक्षा की जिम्मेदारी से मुँह

मोड़ लिया। न कंपनी शिक्षा का प्रसार करना चाहती थी न जनता शिक्षा की माँग करने की स्थिति में थी। अत: शिक्षा की ओर आरंभ में अंग्रेजों का ध्यान नहीं गया।

शिक्षा की दिशा में अंग्रेज कंपनी की ओर से पहला कदम सन् 1781 ई. में उठाया गया। "सन 1781 ई. में वारेन हेस्टिंग्ज ने कलकत्ते में एक मदरसा खोला, जिसका उददेश्य मुसलमानों को धार्मिक शिक्षा देना था।"[1] शिक्षा के संबंध में 1815 ई. के 'ईस्ट इंडिया ॲक्ट' में यह तय हुआ कि भारत में शिक्षा के प्रसार के लिए प्रतिवर्ष 1 लाख रूपये सरकार (कंपनी) की ओर से दिए जाएँगे। 1833 ई. में कंपनी ने यह रक्कम दस लाख कर दी। इस समय शिक्षा के माध्यम का भी प्रश्न सामने आया। 1855 ई. में मे मेकॉले का नीचे पहुँचाने का सिद्धांत (Downward Filtration Theory) आया। उसमें शिक्षा का माध्यम अंग्रजी को ही माना गया और भारतीय भाषा तथा साहित्य को दूर ही रखा गया। मेकॉले के सिदधांत में यह भी था कि सब लोगों को शिक्षा देना कठिन है, इसलिए उच्च स्तर के लोगों को पढाओं, प्राप्त ज्ञान देशी भाषाओं के द्वारा सामान्य जनता तक पहुँच जाएगा लेकिन ऐसा नहीं हो सका क्योंकि शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी था। अंग्रेजी सरकार का भी प्रमुख उद्देश्य भारतीय लोगों में अंगेजी भाषा, शास्त्रों और वाङ्मय का प्रचार-प्रसार करना था। इसलिए अंग्रेजी स्कूलों का निर्माण किया गया। भारतीय जनता में व्यापक शिक्षा प्रसार में मेकॉले का सिद्धांत निरर्थ क ही साबित हुआ।

कंपनी सरकार की भाषा-नीति 1854 ई. के 'वुड का एज्युकेशन डिस्पैच' में निश्चित हुओ। इस डिस्पैच के द्वारा यह निश्चित किया कि उच्च शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से ही दी जाएगी किंतु अन्य जनता की शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होगी। शिक्षा के माध्यम की इस दुहरी नीति का परिणाम हम आज भी भुगत रहे हैं। आज कितने लोग उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं यह स्वतंत्र-अनुसंधान का विषय है। भारत में 1857 ई. के

---

1. रामधारीसिंह दिनकर - संस्कृति के चार अध्याय, पृष्ठ -423

विद्रोह के साल ही मुंबई, कलकत्ता और मद्रास में विश्वविद्यालयों का निर्माण हो गया। 1882 ई. में लाहोर में पंजाब विश्वविद्यालय बना। 1887 ई. मे इलाहाबाद विश्वविद्यालय स्थापन हुआ। धीरे-धीरे पूरे देश में विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों की संख्या बढ़ती गई।

'कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग' की स्थापना 1917 ई. में हुई। इस आयोग ने माध्यमिक और विश्वविद्यालय की शिक्षा के मध्य इंटरमिजिएट परीक्षा हो, पदवी के लिए तीन साल का पाठयक्रम हो; पाठ्यक्रम, परीक्षाएँ आदि के लिए अलग मंड़ल की स्थापना की जाए आदि सिफारिशें प्रस्तुत की। अत: स्पष्ट है कि, उस समय पूरे भारत वर्ष में शिक्षा की सुयोग्य व्यवस्था नहीं थी इसलिए संपूर्ण देश की शिक्षा व्यवस्था एक जैसी होने के लिए विश्वविद्यालय आयोग ने ऐसी सिफारिसे की। लेकिन दुर्भाग्य से आयोग के सुझावों को उत्तर प्रदेश को छोड़कर किसी भी राज्य ने स्वीकार नहीं किया। भारत को 1947 ई. में आजादी मिली। आजादी के बाद शिक्षा की दिशा को स्पष्ट करने के लिए 1948 ई. में 'राधाकृष्णन आयोग' की स्थापना की गयी। इस आयोग ने शिक्षा के समग्र क्षेत्र का आकलन करने के बाद निश्चित किया कि संपूर्ण देश की शिक्षा व्यवस्था एक जैसी होनी चाहिए। अत: उन्होंने 10 + 2 + 3 की रचना का आग्रह किया।

1952 ई. में निर्धारित 'मुदलीयार आयोग' के सामने माध्यमिक और उच्च माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था पर विचार करने का कार्य सौंपा गया। इस आयोग ने यह सुझाव दिया कि माध्यमिक शिक्षा 11 साल की हो। 17 साल के बाद छात्र महाविद्यालय में प्रवेश करें। 11 सालों की शालेय शिक्षा इंटरमिजिएट परीक्षा के दर्जा के समान हो। 17 साल में छात्र महाविद्यालयीन शिक्षा पाने के लिए पूरी तरह से तैयार होना चाहिए। संपूर्ण भारत देश में शिक्षा पद्धति के मूलभूत परिवर्तन के लिए 1964 -66 ई. में 'कोठारी आयोग' का निर्माण किया गया। इस आयोग ने संपूर्ण देश में एक जैसी शिक्षा व्यवस्था के निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया। इस आयोग ने पूरे देश में 10 + 2 +3

आकृतिबंध पर जोर दिया। इसमें 10 साल की माध्यमिक शिक्षा, 2 साल की उच्च माध्यमिक शिक्षा और 3 साल की विश्वविद्यालयीन पदवी की शिक्षा व्यवस्था की योजना रही है। इस पद्धति का पूरे देश में प्रयोग होने लगा है।

आज पूरे देश में यही व्यवस्था चल रही है। 1 से 10 तक माध्यमिक शिक्षा, 11-12 उच्च माध्यमिक शिक्षा, 13-15 तक प्रथम स्नातक स्तर की शिक्षा और 16-17 तक को स्नातकोत्तर शिक्षा कहा जाता है।

आज स्वतंत्र भारत देश में शिक्षा व्यवस्था में नए-नए प्रयोग हो रहे हैं। शिक्षा का माध्यम बदल रहा है। विषय के उपविषय बनाए जा रहे हैं और गहराई तक की शिक्षा देने की व्यवस्था भी की गई है। अत: आज शिक्षा व्यवस्था ने व्यापक रूप प्राप्त किया है। जरूरत के अनुसार शिक्षा दी जा रही हैं। परंपरागत शिक्षा व्यवस्था जो अंग्रेजों के जमाने से चली आयी है उसमें समय-समय पर सुधार भी हुआ है। आज इसी शिक्षा व्यवस्था के साथ तंत्रशिक्षा को भी विशेष स्थान प्राप्त हुआ है। देश-विदेशों में शिक्षा व्यवस्था में जो बदलाव आए हैं उन्हीं बदलावों की झलकें गाँव, नगरों में बसे स्कूल-कालेजों तक दिख रही हैं। इस शिक्षा व्यवस्था से जो अच्छे-बुरे परिणाम सामने आए हैं यही प्रतिनिधिक रूप में गिरिराज किशोर के परिशिष्ट उपन्यास में उजागर हुए हैं। अत: परिशिष्ट उपन्यास में चित्रित शिक्षा व्यवस्था के स्वरूप का अंकन करना प्रस्तुत शोधकर्ता का लक्ष्य रहा है।

### 4.5 'परिशिष्ट' उपन्यास में चित्रित शिक्षा व्यवस्था :

गिरिराज किशोर का 'परिशिष्ट' उपन्यास स्वातंत्र्योत्तर काल की रचना है। इस में आजादी के बाद की सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था विशेष रूप से चित्रित हुई है। उपन्यास का केंद्र है - अनुसूचित जातियों को मिलनेवाली वास्तविक सुविधा का प्रश्न। पिछड़ी जातियों तथा निम्न वर्गों के विकास के लिए अपनायी जानेवाली व्यवस्था कितनी ठोस है? इन वर्गों के हितों के निर्णयों में कितनी सच्चाई है? आदि प्रश्नों को लेखक ने उपन्यास में उठाया है। स्वातंत्र्योत्तर काल में विविध आयोगों

द्वारा शिक्षा व्यवस्था के स्वरूप को निर्धारित करने का प्रयास किया गया। विविध योजनाएँ चलायी गयी उसके अनुसार ही आई.आई.टी की स्थापना की गई। यह एक स्वायत्त शिक्षा संस्थान है। इसमें जे.ई.ई. प्रवेश परीक्षा के द्वारा पूरे देश के प्रतिभाशाली छात्रों को चुनकर प्रौद्योगिकी शिक्षा दी जाती है। आई.आई.टी के शैक्षिक वातावरण का चित्रण 'परिशिष्ट' उपन्यास में अधिक स्पष्ट रूप में दिखाई देता है। उसमें वहाँ के प्रशासन, वहाँ का व्यवस्थापन, अध्यापक, छात्र, परीक्षा व्यवस्था आदि मुद्दों पर विस्तार से विवेचन हुआ है।

### 4.5.1 प्रशासन :

'प्रशासन' शब्द का व्यापक अर्थ है। लेकिन शिक्षा क्षेत्र में यह शब्द सीमित अर्थ में प्रयुक्त होता है। 'प्रशासन' शब्द का कोशगत अर्थ है - "शिष्य आदि को दी जानेवाली कर्तव्य की शिक्षा। राज्य के परिचालन का प्रबंध या व्यवस्था, एडमिनिस्ट्रेशन।"[1] तो दूसरे अर्थ में - "राज्य के सार्वजनिक अधिकारों विशेषत: कार्यकारी अधिकारों की सुव्यवस्था की दृष्टि से किया जानेवाला निष्पादन।"[2] 'शिक्षक हिंदी शब्दकोश' में इसका अर्थ है "नगर आदि के अधिकारों, कर्तव्यों को कार्य रूप देना, शासन।"[3] 'डायमंड हिंदी शब्दकोश' में इसका अर्थ है - "सरकारी या संस्थागत कार्यों की व्यवस्था, शासन (administration)"[4] उक्त सभी शब्दकोशों में प्रशासन का अर्थ एक जैसा है। अत: स्पष्ट है कि प्रशासन याने किसी कार्य को कार्यान्वित करने के लिए निर्धारित की गयी व्यवस्था। अंग्रजी में इसे 'ॲडमिनिस्ट्रेशन कहा जाता है। प्रशासन के आधार पर कोई भी संस्था, शासन आदि के कार्य सुव्यवस्थित चलते हैं। अत: प्रशासन की रचना सोच -समझकर निश्चित करना आवश्यक हो जाता है।

---

1. सं.श्री नवलजी - नालंदा विशाल शब्दसागर, पृष्ठ - 908
2. सं.रामचंद्र वर्मा - मानक हिंदी शब्दकोश (तीसरा खण्ड), पृष्ठ - 639
3. सं. हरदेव बाहरी - शिक्षक हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ - 262
4. डॉ.गिरिराज शरण अग्रवाल, डॉ.बलजित सिंह - डायमंड हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ - 628

शिक्षा व्यवस्था में प्रशासन को अन्यन साधारण स्थान है। प्रशासन अगर सुव्यवस्थित हो तो शिक्षा क्षेत्र का भविष्य उज्ज्वल होता है। किंतु इसके अभाव में अर्थात अव्यवस्थित प्रशासन से शिक्षा क्षेत्र की हानी ही होती है। आई.आई.टी. स्वायत्त शिक्षा संस्थान है; उसकी अपनी स्वतंत्र निर्णय प्रक्रिया है। देश के शिक्षा मंत्रालय से करोडों की ग्रांट लेकर उसका चलनवलन होता है। अत: देश के प्रशासन का आई.आई.टी. से संबंध है। वह इस प्रकार है -

**4.5.1.1 प्रधानमंत्री :**

भारत देश में जनतांत्रिक व्यवस्था है। चुने हुए संसद सदस्य देश का कारोबार चलाते हैं। शासन चलाने का काम राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा उनका मंत्रीमंडल और संसद सदस्य करते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित प्रधानमंत्री जी हरिजन लोगों का स्तर उपर उठाने के लिए उन्हें सुविधा देने के पक्ष में है। वे हरिजनों पर हो रहे अन्याय-अत्याचारों के निवारण के लिए विस्तृत जनजागरण की आवश्यकता महसूस करते हैं। इसके लिए वह एक कमेटी स्थापित करना चाहते हैं और उसमें सांसद मंगतसिंह चौधरी जैसे हरिजन हितैषी लोंगों को लेना चाहते हैं। आई.आई.टी. में आरक्षण से प्रवेश उनके ही योजना का एक हिस्सा है। अत: प्रधानमंत्री जी दलित एवं पिछड़ी जनजातियाँ तथा निम्न वर्ग के लोगों का जीवन स्तर उपर उठाने के पक्ष में दिखाई देते हैं। वे दलित उद्धार के लिए प्रयत्न करते हैं।

**4.5.1.2 शिक्षामंत्री :**

देश के 'मानवसंसाधन विकास मंत्रालय' के अंतर्गत शिक्षा विभाग का कामकाज चलाया जाता है। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित शिक्षा मंत्रालय ने यह निश्चित किया था कि आई.आई.टी. में अनुसूचित जाति के छात्रों को किसी भी सामूहिक टेस्ट के बिना प्रवेश दिया जाएगा। उसी के तहत अनेक दलित छात्र आई.आई.टी. में दाखिल हो जाते है।

प्रस्तुत उपन्यास में रामउजागर नाम के अनुसूचित जाति के छात्र को छुट्टी कैंसिल कर संस्थान में फिर से प्रवेश नहीं दिया जा रहा था। यह बात अल्पसंख्याक आयोग के अध्यक्ष के जरिए शिक्षामंत्री तक पहुँच जाती है। शिक्षामंत्री संस्थान के चेयरमैन को लिखते है - "संस्थान का प्रशासन भेदभावपूर्ण नीति बरत रहा है। जहाँ तक हो रामउजागर की सहायता का प्रयत्न करें।"[1] लेकिन संस्थान के पदाधिकारी रामउजागर के प्रवेश को राजनीति में अटका देते है। इसकी परिनीति रामउजागर के आत्महत्या में होती है। अत: यह स्पष्ट है कि सरकार की तरफ से पिछड़ी जनजातियों के कल्याण के निर्णय होते हैं लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि जिसके हाथ में उसका परिचालन है वे लोग ही भेदभाव की नीति अपनाते हैं।

**4.5.1.3 सांसद (एम.पी.) :**

भारत देश में जनतांत्रिक सरकार है। हर पाँच साल में चुनाव होते हैं। पूरे देश के अपने-अपने क्षेत्र से सांसद चुनकर आते हैं। वे संसद में जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं। 'परिशिष्ट' उपन्यास में दो सांसदों का उल्लेख मिलता हैं। एक है राजेंद्रसिंह जो ठाकूर हैं। वे दलित एवं पिछड़ी जनजातियों को आरक्षण जैसी सुविधाएं देने विरुद्‍ध हैं। दूसरे सांसद मगंतसिंह चौधरी जो दलितों के प्रति सहानुभूती रखनेवाले, उनके विकास के पक्षधर है। उनकी सहायता से पिछड़ी जाति के बावनराम अपने बेटे को आई.आई.टी. में प्रवेश दिलवाते है। चौधरी साहब बावनरामजी को वहाँ के वातावरण की कल्पना भी देते है। अत: स्पष्ट है कि आज भी कुछ लोगों में जातीयवादी प्रवृत्ति शेष है। फिर भी चौधरी साहब जैसे लोगों से आशा की किरण दिखाई देती हैं।

**4.5.1.4 अफसर :**

भारत देश में जनता द्‍वारा चुने गए प्रतिनिधियों द्‍वारा शासन चलाया जाता है। जनप्रतिनिधी तो हर पाँच साल में बदलते रहते हैं लेकिन प्रशासन का चलन तो

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 299

नौकरशहाओं के द्वारा ही होता हैं। प्रशासन की ओर से जनता के हितों के लिए विविध योजनाएँ तैयार की जाती हैं। किंतु उसका वास्तविक अमल तो अफसर लोग ही करते हैं। उनके हाथ में ही प्रशासन की बागड़ौर होती है। अगर अफसर लोग पूर्वग्रह विरहित दृष्टि से काम करेंगे तो जनता का कल्याण होगा अन्यथा जनता को प्रशासन व्यवस्था से कोई लाभ नहीं होगा।

प्रस्तुत उपन्यास में बडे अफसर के रूप में कृष्णन साहब का चित्रण प्राप्त होता है। सांसद चौधरी साहब आई.आई.टी. में आरक्षण से प्रवेश बंध में पिछड़ी जाति के बावनराम और अनुकूल को कृष्णन साहब से मिलने के लिए शास्त्री भवन में भेज देते है। कृष्णन साहब उन्हें वहाँ का वातावरण, होनेवाला खर्चा, छात्रों की आत्महत्याएँ आदि की कल्पना देते हैं लेकिन बावनराम अपनी बात पर अडिग रहते हैं। कृष्णन साहब आरक्षण के अंतर्गत प्रवेश देने का आश्वासन देते हैं। कुछ दिनों बाद अनुकूल को आई.आई.टी.प्रवेश प्राप्ति की चिठ्ठी आती है। अत: कृष्णन साहब का मद्द का दृष्टिकोण परिलक्षित होता है।

**4.5.1.5 अन्य :**

प्रस्तुत उपन्यास में प्रशासन के अतंर्गत पी.ए. बाबू (क्लर्क), चपराशी, गार्ड आदि का भी उल्लेख मिलता है। इन लोगों में भी जातीयता की भावना विधमान है। उनका दृष्टिकोण पूर्वग्रह दूषित है। वे मिलनेवालों का मजाक उड़ाते हैं। उनमें से कई तों अपने काम में व्यस्त रहने का दिखावा करते हैं। अत: स्पष्ट है कि अपने देश में बातों से ही दूसरों को चोट पहुँचाने का काम किया जाता है। ऐसे लोग अपने काम से जादा अन्य बातों पर ही ध्यान देते हैं। वे काम कम दिखावा जादा करते हैं।

**4.5.2 व्यवस्थापन :**

'नालंदा विशाल शब्दसागर' में 'व्यवस्थापन' शब्द का अर्थ है- "व्यवस्था देने अथवा करने का काम या भाव। किसी विषय में कुछ निश्चय -निर्धारण या निरूपण

करना।"[1] इसके बारे में 'डायमंड हिंदी शब्दकोश' में लिखा है - "व्यवस्था करने का कार्य; शास्त्रीय व्यवस्था देने का कार्य, क्रम संयोजन।"[2] इसी अर्थ की पुष्टि 'मानक हिंदी शब्दकोश' में हुई है - "व्यवस्था करने कि क्रिया या भाव। किसी विषय में शास्त्रीय व्यवस्था देना या बतलाना।"[3] अत: स्पष्ट है कि व्यवस्थापन याने किसी कार्य को सुनिश्चित तथा निर्धारित ढंग से कार्यान्वित करने के लिए नियुक्त किये गए व्यक्तियों का संगठन।

आई.आई.टी. स्वायत्त शिक्षा संस्थान है। इस संस्थान का देश में ही नहीं तो विश्व में नाम है। अतंर्गत स्वायत्तता होने के कारण इस संस्थान का व्यवस्थापन देखने के लिए नियोजित व्यवस्था है। व्यवस्थापन इसलिए होता है कि वह संबंधित शिक्षा संस्थान में उत्पन्न समस्याओं का निराकरण करें। प्रस्तुत उपन्यास में आई.आई.टी. के व्यवस्थापन के विविध घटकों को प्रस्तुत किया है। वह इस प्रकार है -

### 4.5.2.1 डायरेक्टर :

डायरेक्टर का काम होता है संस्थान का व्यवस्थापन सुव्यवस्थित चलाना। संस्थान से संबंधित सभी को समान न्याय दिलाना लेकिन 'परिशिष्ट' उपन्यास में चित्रित डायरेक्टर उच्च वर्ग के हिमायती दिखाई देते हैं। एक छात्र डायरेक्टर के बारे में दूसरे को कहता है - "खन्ना के सामने डायरेक्टर की भी पिददी बोल जाती है। उसने सबको अल्टीमेट दे दिया है कि खबरदार, जो रामउजागर के साथ जरा सी भी सहानुभूति दिखलायी गयी। अगर किसी तरह की छुट दी गई तो एक-एक एस.सी./ एस.टी.को कटवा डालूँगा। खन्ना पर भी तो उन्हीं का हाथ है।"[4] अत: स्पष्ट है कि प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित डायरेक्टर उच्च वर्ग के हितैषी है तथा इंण्डस्ट्री के लोगों से मिले हुए है। वे यहाँ से निकलकर उद्योगकर्मियों के फैक्ट्री में ज्यादा पैसे से डायरेक्टर बन सकते है।

1. सं.श्री नवलजी - नालंदा विशाल शब्दसागर, पृष्ठ - 1310
2. डॉ.गिरिराज शरण अग्रवाल, डॉ.बलजित सिंह - डायमंड हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ - 787
3. सं.रामचंद्र वर्मा - मानक हिंदी शब्दकोश (पाँचवा खण्ड), पृष्ठ - 127
4. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 266

उद्योगकर्मी एस.सी., एस.टी. लोगों से नफरत करते हैं। इसलिए डायरेक्टर भी एस.सी., एस.टी. छात्रों के प्रति उदासीन है।

**4.5.2.2 डिप्टी डायरेक्टर :**

डायरेक्टर को संस्थान का व्यवस्थापन करने में सहायता करने के लिए डिप्टी डायरेक्टर होता है। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित डिप्टी डायरेक्टर उच्च वर्ग के लोगों से संबंधित तथा एस.सी., एस.टी. छात्रों के प्रति नकारात्मक रवैया अपनाने वाले हैं। वे मानसिक असंतुलन के कारण एक साल की छुट्टी पर रहे अनुसूचित जाति के छात्र रामउजागर को संस्थान में फिर से प्रवेश देने के विरुद्ध है। उनका मानना है कि एस.सी., एस.टी. छात्रों की उपस्थिति से बाकी छात्र डिस्टर्बड होते हैं। उनके अभिभावक भी नाराज होते हैं। डिप्टी डायरेक्टर चैयरमैन प्रो.आठवले से कहते है- "स्टुडेण्टस की खपत इण्डस्ट्रीज में है ---- इण्डस्ट्री इन लागों से घृणा करती है। इनकी वजह से वातावरण दूषित होता है।"[1] अत: स्पष्ट है कि डिप्टी डायरेक्टर दलितों के प्रति पूर्वग्रह दूषित दृष्टिकोण रखनेवाले हैं।

**4.5.2.3 डीन :**

'परिशिष्ट' उपन्यास में चित्रित डीन भी जातीयता की भावना से परहेज नहीं रखते। जब अनुकूल के पिताजी संस्थान में आते हैं तो उन्हें संस्थान के गेस्ट हाऊस में ठहराने के लिए विरोध करते हैं। यही बात रामउजागर के पिताजी के बारे में भी घटित होती है क्योंकि वे निम्न वर्ग के हैं। डीन का मानना है कि हम यहाँ रहकर ऊँची जातियों को नाराज करके खतरा मोल नहीं सकते। उच्च वर्ग का प्रतिनिधि छात्र खन्ना दलित छात्रों पर अन्याय-अत्याचार करता है। वह दलित छात्र अनुकूल के पैर की हडडी तोड़ देता है फिर भी उस पर कोई कार्यवाही नहीं होती। डीन जैसे लोग खन्ना की कार में घूमते हैं। डीन का मानना है कि खन्ना एस.सी. स्टुडेण्टस की न्यूसेन्स खत्म करने के

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 271

लिए पैदा हुआ है। निम्न वर्ग के छात्रों के बारे में वे कहते है - "इतनी खूबसूरत और महान संस्था इन्हीं लोगों के कारण रसातल को जा रही है। सारे शैक्षिक स्तरों को इन्हीं के कारण मिटट्री में मिलाया जा रहा है।"[1] अगर ऐसे पूर्वग्रहदूषित दृष्टि के लोग संस्थान में होंगे तो निम्न वर्ग को छात्रों की उन्नति नहीं हो सकती। डीन हो या कोई और सब उच्चवर्गीय छात्रों को ही महत्व देते हैं क्योंकि उनकी फैक्ट्रियों की तरफ से उन्हें किमती भेट वस्तुएँ मिलती रहती हैं।

**4.5.2.4 हेड :**

'परिशिष्ट' उपन्यास में चित्रित 'हेड' छात्रों के हिमायती है लेकिन जातीयता की भावना उनके मन में भी विधमान है। वे दलित छात्र रामउजागर को उसकी स्थितियों से परिचित करवाते हुए कहते हैं - "ऐसी संस्थाएँ तुम लोगों के मान की नहीं होतीं। हम लोग आप लोगों की मदद् करना चाहते हैं पर जब तक आपकी पृष्ठभूमि मजबूत नहीं होगी हम लोग ज्यादा कुछ नहीं कर पायेंगे।"[2] वे रामउजागार के जरिए दलित छात्र अनुकूल को संस्थान छोड़ने को कहते है। उनका मानना है कि उच्चवर्गीय छात्र खन्ना से अनुकूल ने झगड़ा मोल लिया है। लेकिन वास्तव में ऐसा है ही नहीं।

**4.5.2.5 वार्डन :**

प्राचीन काल में छात्र गुरुकुल में रहकर शिक्षा ग्रहण करते थे। आधुनिक काल में छात्र शिक्षा संस्थानों के छात्रावास में रहकर से शिक्षा प्राप्त करते हैं। यहाँ छात्र छात्रावास में रहते हैं। छात्रावास के प्रमुख को 'वार्डन' कहा जाता है। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित 'वार्डन' दकियानूसी किस्म का है। वह लडकियों के छात्रावास के दरवाजे पर एक रजिस्टर रखकर उसमें आने-जानेंवालों को नाम, समय लिखने का बंधन करता है। छात्र-छात्राएँ यह बंधन अस्वीकार करते हैं क्योंकि वे बंधन मुक्त रहना चाहते हैं जब छात्र आंदोलन करते हैं। तब संस्थान को अपना नियम पिछे लेना पडता है। अत:

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 232
2. वही , पृष्ठ - 254

दकियानूसी किस्म के वार्डन को अपना निर्णय एकता द्वारा पीछे लेने के लिए छात्र मजबूर कर देते हैं।

### 4.5.3 अध्यापक :

प्राचीन काल से ही भारतीय समाज व्यवस्था में छात्रों के जीवन में अध्यापक का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण रहा है। छात्रों के संदर्भ में अध्यापक का स्थान माता-पिता के बाद लेकिन ईश्वर से पहले आता है। देश और समाज निर्माण में जितने भी कारक हैं उसमें अध्यापक की भूमिका अहम होती है। अध्यापक का लक्ष्य छात्रों का सुयोग्य चरित्र निर्माण कर उसे अच्छे भविष्य के लिए तैयार करना होता हैं। पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जी ने लिखा है "शिक्षकों का महान् ध्येय युवा मास्तिष्कों को तेजस्वी बनाना है। तेजस्वी युवा धरती पर, धरती के नीचे और ऊपर आसमान में भी सबसे सशक्त संशाधन है। शिक्षक की भूमिका उस सीढ़ी जैसी है, जिसके जरिए लोग जीवन की ऊँचाइयों को छूते हैं।"[1] अध्यापक का काम केवल अध्यापन करना नहीं होता तो वे अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से छात्रों को जीवन और व्यवहार में सच्चाई की शिक्षा देता है। डॉ.अर्जुन चव्हाण जी ने लिखा है - "अध्यापक की आवश्यकता किसी भी देश और समाज के स्कूल-कालेजों में केवल छात्रों का शंका समाधान कर उनका मार्गदर्शन करने के लिए नहीं होती बल्कि अपने व्यक्ति एवं कृतित्व से उन्हें संस्कारित करने के लिए होती है।"[2] अर्थात अध्यापक अपने व्यक्तिगत जीवन से छात्रों के सामने आदर्श प्रस्तुत करता हैं। लेकिन आज के वैश्विकीकरण के युग में शिक्षा व्यवस्था में तेजी से परिवर्तन हो रहा है। बाजारीकरण के इस माहौल में आदर्श शिक्षक वृत्ति समाप्त हो रही है। अध्यापक का प्रमुख कार्य है अध्यापन लेकिन आज का अध्यापक अपने कार्य से भटका हुआ दिखाई दे रहा है। प्रस्तुत उपन्यास में इसमें लेखक ने अध्यापकों के विविध रूपों को दिखाने का प्रयास किया है। इसमें कुछ त्यागी, आदर्शवादी अध्यापक है तो

---

1. डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आझाद - अदम्य साहस, पृष्ठ - 22
2. डॉ.अर्जुन चव्हाण - जरा याद करो कुर्बानी - पृष्ठ - 43

अधिकतर अध्यापक स्वार्थी, अहंयुक्त, विदेश से प्रभावित, संवेदनाहीन, जातीयवादी, लालची आदि रूपों में चित्रित हैं। अत: किसी भी शिक्षा संस्थान की सफलता उसको अध्यापकों के व्यवहार पर निर्भर करती हैं।

### 4.5.3.1 आदर्श अध्यापक :

प्राचीन काल से भारतीय समाज व्यवस्था में अध्यापकों का स्थान त्यागी एवं आदर्श रहा है। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित प्रो.मलकानी इसका ही एक उदाहरण है। वे दलित छात्र रामउजागर को न्याय देने के लिए निरंतर प्रयास करते हैं। इसलिए उन्हें अपने साथी तथा संस्थान के पदाधिकारीयों का विरोध सहना पड़ता है लेकिन वे पीछे नहीं हटते। वे अकेले ही रामउजागर का समर्थन करते हुए कहते हैं - "वही समाज संवेदनशील, मानवीय और विकासशील होता है जिसमें हर इन्सान के पास अपनीं मेहनत के सहारे अपने भविष्य सँवारने का अधिकार हो तथा जहाँ पर लोगों के जन्मजात खूँटे न गड़े हो।"[1] प्रो.मलकानी छात्रों के हित के लिए संस्थान तक छोड़ने को तैयार है। अत: छात्रों का जीवन सँवारने का कार्य प्रो.मलकानी करते हैं।

### 4.5.3.2 राजनीति में गढ़े अध्यापक :

प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित अनेक अध्यापक राजनीति की गंदगी में डूबे दिखाई देते हैं। निम्न वर्ग का छात्र रामउजागर 'लीव' खत्म कर संस्थान में लौटना चाहता है लेकिन उसे संस्थान में प्रवेश न मिले ऐसा प्रयास संस्थान के 'डायरेक्टर' से लेकर 'डीन' तक सभी करते हैं। उसकी बात कोई भी नहीं सुनता। प्रोफेसर मलकानी निम्न वर्ग के छात्र रामउजागर को संस्थान में वापस लेने के पक्ष में एस.यू.जी.सी. कमेटी में प्रभावी भाषण करते हैं लेकिन शेष अन्य अध्यापक तथा कमेटी सदस्य उनका विरोध करते हैं। चेयरमैन भी सीनेट से मशवरा करना जरूरी है ऐसा बहाना करके निर्णय टाल देते हैं। चेयरमैन ओर अन्य पदाधिकारी अगली कमेटी की मिटिंग तब तक न बुलाने का फैसला

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 269



BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

करते हैं जब तक मलकानी कमेटी से हट न जाए क्योंकि प्रोफेसर चंद्रा विदेश गए थे उनके स्थान पर प्रो. मलकानी थे। अत: स्पष्ट होता है कि इन बुद्धिजीवियों की राजनीति राजनीतियों से भी ज्यादा खतरनाक है। ये जिसके पीछे पड़ जाते हैं उसे बरबाद करके ही दम लेते है। इसका ज्वलंत प्रमाण रामउजागर है।

**4.5.3.3 मातृभाषा के प्रति अनास्था :**

आई.आई.टी. में अध्यापन करनेवाले अध्यापक विदेशों में अध्ययन करके आते हैं इसलिए विदेशी संस्कृति का भूत उनपर सवार होता है। अत: अपने मातृभाषा हिंदी में बोलना उन्हें बुरा लगता है। वे बोलते हैं तो भी विदेशी भाषा अंग्रेजी में। विदेशियों के तौर-तरीके उन्हें अपने लगते है। वे अंग्रेजी भी ऐसे बोलते हैं जैसे उन्होंने अपनी मातृभाषा में कभी बात ही न की हो। वह जिस राष्ट्र की रोटी खाते उस राष्ट्र की राष्ट्रभाषा के प्रति हीन दृष्टिकोण रखते हैं। प्रो. राव छात्रों से कहते हैं - "दुनिया की इस दौड में तुम्हारी हिंदी-पिन्दी से कुछ नहीं होनवाला। सफलता अंग्रेजी ही दिला सकती है।"[1] शायद ऐसे विद्वान यह भूल जाते हैं कि चीन में अपनी मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाती है फिर भी विश्व में वह देश उन्नति के शिखर पर है।

**4.5.3.4 संवेदनाहीन अध्यापक :**

प्रस्तुत उपन्यास मे चित्रित अध्यापक अहंभाव से ग्रस्त दिखाई देते है। इसलिए वे छात्रों के साथ आत्मीय रिश्ता नहीं बना पाते। मोहन संस्थान का तनाव असह होकर स्वयं फाँसी लगाकर आत्महत्या करता है। दूसरे दिन सुबह ही प्रो. मुत्तु व्याख्यान लेने को आते हैं, तब उनके चेहरे पर इस घटना का कोई असर दिखाई नहीं देता। यह देखकर अनुकूल को लगता है कि - "छात्र के न रहने का अध्यापक को भी उतना दु:ख होना चाहिए जितना एक बेटे के न रहने पर होता है।"[2] अत: अध्यापकों के संवेदनहीनता का ही यह प्रमाण है। अध्यापकों का स्थान छात्र जीवन में माता-पिता

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 108
2. वही - पृष्ठ - 139

के बाद का है। दुर्भाग्य की बात हैं कि उच्चस्थान प्राप्त अध्यापक आजकल संवेदनशुन्य होते जा रहे हैं यह एक अनुसंधान का विषय हो सकता है।

**4.5.3.5 षड्यंत्री अध्यापक :**

संस्थान के कुछ अध्यापक रामउजागर नाम के छात्र पर अनेक झूठे आरोप लगाकर उसे संस्थान से निकालने के षड्यंत्र में शामिल होते हैं। उनके अनुसार रामउजागर संस्थान में गुण्डा-गर्दी करता है। एक प्रोफेसर के अनुसार राम पूरे संस्थान को एस.सी., एस.टी.में परिवर्तित कर देना चाहता है। वे आगे कहते है - "राजउजागर ने अपने से वरिष्ठ लड़की को बेइज्जत करके संस्थान छोड़ने लिए मजबूर कर दिया।"[1] ऐंसे अनेक झूठे आरोप लगाकर प्रोफेसर महाशय क्या साबित करना चाहते है। इस घटना से अध्यापकों के अंदर के खोखलेपन का परिचय मिलता है।

**4.5.3.6 जाति भेदाभेद से ग्रस्त अध्यापक :**

इस संस्थान के अधिकांश अध्यापक जातीयता की भावना से ग्रस्त दिखाई देते हैं। वे ऊँच जाति के छात्रों द्वारा निम्नवर्ग के छात्रों पर होनेवाला अन्याय -अत्याचार देखते हैं। खन्ना और उसके साथी निम्न वर्ग के छात्र अनुकूल को मारपीट करके उसकी टाँग तोड देते हैं लेकिन खन्ना पर कोई कार्यवाही नहीं होती। निम्न वर्ग के हितैषी प्रो. मलकानी के बारे में संस्थान के अन्य अध्यापकों का दृष्टिकोण दूषित है। संस्थान के डिप्टी डायरेक्टर चेअरमन से कहते हैं - "अगर ऐसा ही है तो प्रोफेसर मलकानी से कहिए बेटे - बेटियाँ बड़े हो रहे हैं। उन्हीं लोगों में शादी करके उनके सम्बन्धी होने की इच्छा पूरी कर ले।"[2] रामउजागर नाम के छात्र को भी यही सवाल परेशान करता है कि मनुष्य के धार्मिक और जातीय भावनाओं को मिटाने कें लिए सदियाँ लगेगी उनसे मुक्ति पाने के लिए समाज के मानसिकता में परिवर्तन जरूरी है।

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 267
2. वही - पृष्ठ - 271

**4.5.3.7 लालची अध्यापक :**

प्रौद्योगिकी की शिक्षा संस्थान के विद्वान प्रोफेसर सीधे -सीधे किसी से कुछ भी नहीं लेते लेकिन 'गिफ्ट्स' के नाम पर उसका स्वीकार करने में पीछे भी नहीं हटेंगे। 'गिफ्ट्स' का स्वीकार यह भी एक तरह की स्वार्थवृत्ति, रिश्वतखोरी ही है। एक छात्र दूसरे से कहता है - "कल आय थे, सबको डिनर पर बुलाया था। इस साल न्यू इयर पर वी.वी.आई. पीज को फैक्ट्री की तरफ से जे गिफ्ट्स दिय गए थे --- एक एक सूट लैंग्थ -- सेंटस -- पाइप्स, लाइटर्स, पार्कर जूनियर, एशट्रे वगैरह, एक -एक ब्रीफ केस में बन्द करके सबको भी पकडा दिये।"[1] इस बात से लेखक ने अध्यापकों की स्वार्थी तथा लालची वृत्ति पर प्रकाश डाला है। संस्थान में प्रोफेसर तथा डीन उच्चवर्गीय छात्रों की ही बाते मानते हैं इसका कारण यह भी है कि प्रतिवर्ष उनकी फैक्ट्रियों की ओर से मूल्यवान 'गिफ्ट्स' आते हैं।

निष्कर्षत: उच्च शिक्षा संस्था के अधिकांश अध्यापक स्वार्थी लालची, षडयंत्री, संवेदनशुन्य और राजनीति से जुड़े दिखाई देते हैं। एखाध अध्यापक ही सिर्फ आदर्श और छात्र हितैषि परिलक्षित होता है।

**4.5.4 छात्र :**

शिक्षा व्यवस्था के केंद्र में छात्र होते हैं। उन्हें सही दिशा दिखानेवाला प्रमुख होता है -अध्यापक। भारतीय संस्कृति मे गुरु-शिष्य परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। छात्र का समानार्थी शब्द है - शिष्य, चेला या विद्यार्थी। भारतीय परंपरा में विद्यार्थी की व्याख्या 'विद्या अर्थयते इति विद्यार्थी' ऐसी की है। अर्थात जे विद्या या ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करता है वही विद्यार्थी है। विद्यार्थी या छात्र का संबंध आयु से नहीं होता। व्यक्ति जीवन से मृत्यू तक विद्यार्थी बना रहता है। प्राचीन भारतीय परंपरा विद्यार्थी या शिष्य का संबंध आयु के साथ-साथ गुरुकुलीय शिक्षा

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 265

व्यवस्था से था। स्कूल के अर्थ में आज भी इसका संबंध आयु के साथ जोड़ा जाता है। आधुनिक भारतीय शिक्षा व्यवस्था में विशिष्ट आयु में विद्यालय तथा महाविद्यालय में प्रवेश दिया जाता है। आज मुक्त विश्वविद्यालयों के कारण व्यक्ति जीवन के अंत तक विद्यार्थी बन सकता है।

प्रस्तुत उपन्यास में छात्र शब्द का अर्थ निश्चित सीमा तक ही माना है। बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण होने के बाद जे.ई.ई. प्रवेश परीक्षा से जो युवक आई.आई.टी. में आते हैं और वहाँ की शिक्षा ग्रहण करते हैं उन्हें ही हमने छात्र के अर्थ में लिया है। अत: निश्चित आयु में और अलग परिवेश में शिक्षा ग्रहण करनेवालों को ही यहाँ छात्र माना है।

### 4.5.4.1 प्रतिभाशाली एवं मेहनती छात्र :

आई.आई.टी अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त शिक्षा संस्थान है। जे.ई.ई. (ज्वाईट एन्ट्रान्स एक्जामिनीशन) प्रवेश परीक्षा पास करके संस्थान में आना आसन बात नहीं है। जिसमें प्रतिभा, हुन्नर हैं वही यहाँ आ सकते हैं । यहाँ आने के बाद बना रहना उससे भी बड़ा कठिन कार्य है। दिन के चौबीस घण्टों में से अठारह-अठारह घण्टे पढ़ाई करनी पड़ती है। भूख से भी ज्यादा महत्वपूर्ण पढ़ाई होती है। आज का काम कल पर नहीं टाला जा सकता। आई.आई.टी. के छात्र पढ़ाई खत्म करके विदेश में जाते हैं इसलिए यहाँ आरक्षण के अंर्तगत दलित छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। आरक्षण आनेवाले छात्र भी प्रतिभाशाली होते है। 'परिशिष्ट' उपन्यास में ऐसे छात्रों के संदर्भ पाए जाते हैं।

### 4.5.4.2 संघर्षशील छात्र :

इस संस्थान के छात्रों में संघर्षशीलता की वृत्ति विद्यमान है। उच्चवर्ग का छात्र खन्ना और उसके साथी निम्न वर्ग के छात्र अनुकूल को मारपीट करते हैं। तब वह श्योर मचाता है न अपनी जगह से हिलता है। वह यह देखना चाहता है कि अपने उद्देश्य के लिए बलिदान देने के लिए वह कहाँ तक तैयार हैं। पिता जी द्वारा घर बुलाने पर

उसका कहना होता है कि घर लौटकर अपने आप को सुरक्षित महसूस करने के स्थान पर अधिक अरक्षित हो जायंगे। सदियों से पीड़ित एवं शोषित वर्ग के लिए वह कुछ करना चाहता है। अनुकूल के शब्दों में "हमें आगे आने वाले चेलेंज योग्य बनना है और बर्दा श्त करना भी सीखना है। मैंने अपने संदर्भ में यही सोचा है कि जहाँ पहुँच चुके है, कम -से-कम उससे पीछे तो न लौंटे।"[1] अत: अनुकूल संघर्षशील छात्र दिखाई देता है। हम उसे साहसी मानते है जो कोई पराक्रम करता है लेकिन शोध छात्रा नीलम्मा उसे साहसी मानती है जो अधिक से अधिक सहन करने का धैर्य रखता है। इस मायने में अनुकूल संघर्षशील है। अनुकूल और रामउजागर के पिताजी संस्थान में जब आये थे तब संस्थान के गेस्ट हाऊस में रहने के लिए उन्हें जगह नहीं दी जाती। नीलम्मा डीन से संघर्ष करके उन लोगों को गेस्ट हाउस में जगह दिलवाती है। रामउजागर एक संघर्षशील छात्र है। वह अनुसूचित जाति के छात्रों का आधार है। उसका मानना है कि हर व्यक्ति को आत्मसम्मानी होना चाहिए। वह अपनी जीवन यात्रा में अनेक यातनाओं को झेलता है। अपने कार्य में वह तत्पर है।

**4.5.4.3 नारी स्वतंत्रता के समर्थक :**

आई.आई.टी. के छात्र आधुनिक युग के प्रतिनिधि है। अत: स्त्री-पुरूष समानता के पक्षधर है। छात्रावास में रहनेवाले लड़के और लडकियाँ एक दूसरे से मिल सकते हैं उनपर किसी भी प्रकार का प्रतिबंध नहीं है। जब गर्ल्स हॉस्टल में दकियानूसी किस्म का वार्डन निर्धारित करता है कि लडकियों से मिलनेवाले लड़कों को वहाँ के रजिस्टर में आने -जाने का समय दर्ज करना आवश्यक है। नीलम्मा के नेतृत्व में लडकियाँ इस नियम का सविनय विरोध करती है। लड़के भी उनका साथ देते हैं।अत: वे यह नियम व्यवस्थापन को वापस लेने पर मजबूर कर देते हैं। उस समय नीलम्मा डीन से कहती है - "हम वेश्याएँ नहीं है कि आने - जानेवालों का हिसाब रखा जाए और

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 156

वक्त खत्म होते ही हमें अन्दर बन्द कर दिया जाए --- आप हमसे वही व्यवहार करें जो आप लोग पुरूष होने के नाते आपस में करते हैं।"[1] अत: स्पष्ट है कि आई.आई.टी. के छात्र स्त्री -पुरूष समानता के पक्षधर तथा नारी स्वतंत्र्यता के समर्थक है।

**4.5.4.4 सेवाभावी छात्र :**

अपना गाँव, घर छोडकर आई.आई.टी. में पढ़ने आये छात्र छात्रावास में रहते हैं। एक दूसरे को सहारा देकर पढ़ाई करते हैं। यहाँ ऐसे अनेक क्षण आते है कि एक-दूसरे का साथ देना आवश्यक होता है। संस्थान का एक छात्र राजू बीमारी की वजह से अस्पताल में दाखल होता है, उसके घर से कोई नहीं आता। उस सात दिनों में रामउजागार ने राजू की आत्मीयता से सेवा की। शोध छात्रा नीलम्मा भी उसका साथ देती है।

निम्न जाति का छात्र वाल्मिकी को छात्रावास में अपने साथ रखने के लिए कोई भी लड़का तैयार नहीं था। अनुकूल उसे अपने साथ कमरे में जगह देता है। अनुकूल निम्न जाति के छात्रों को संस्थान से वजीफा ना मिलने पर छात्रों को इकट्ठा करता है। रामउजागर के संबध अनुकूल खुद की टूटी टाँग पर बिना ध्यान दिए एस.यू.जी.सी.कमेटी के सदस्यों से मिलकर उनसे रामउजागर की 'लीव' खत्म करके संस्थान में वापस लेने की बिनंती करता है।

रामउजागर संस्थान में पढ़नेवाले अनुसूचित जाति के छात्रों का आधार है।वह सब लोगों को भी मद्द करता है।वह किसन नाम के कर्मचारी को हाउस एलाउन्स तथा खाना भत्ता दिलवाता है। रैगिंग होने से एक लड़के के मुँह से खून आता है।रामउजागर ही उसे सँभालता है।उसे ने ऐसे अनेक लोगों के हितों का काम किया है।

नीलम्मा अस्पताल में भर्ती राजीव नाम के छात्र का ख्याल रखती है उसकी हिम्मत बांधती है। वह अनुकूल और रामउजागार तथा उनके जैसे अनेक छात्रों के मद्द

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 152

के लिए हमेशा तैयार रहती है। रामउजागर मानसिक असंतुलन के कारण छुट्टी पर अपने गाँव जाता है। नीलम्मा उसे मिलने के लिए उसके गाँव जाती है, उसके ही प्रयासों से रामउजागर संस्थान में फिर से वापस लौटता है। नीलम्मा कहने को सवर्ण है लेकिन इन्सान होने का मतलब समझती है। अत: स्पष्ट है कि छात्रों में एक-दूसरे को मदद् करने की तथा सेवाभाव की वृत्ति स्पष्टता से परिलक्षित होती हैं। आई.आई.टी. के सभी छात्र खन्ना जैसे नहीं है। अधिकतर छात्र द्यालु और एक दूसरे के दु:खों में साथ देते दृष्टिगत होते है।

**4.5.4.5 आत्मसम्मानी छात्र :**

हर एक व्यक्ति में आत्मसम्मान होना आवश्यक है। दुनिया में वही व्यक्ति सर उठाकर जी सकता है जो आत्मसम्मानी हो। आई.आई.टी. के अनेक छात्र आत्मसम्मानी दिखाई देते है। रामउजागर,अनुकूल जैसे छात्र किसी के सामने झुकते नहीं। संस्थान में एक बार जब एस.सी. छात्रों को ही अपने अपने बर्तन साफ करने को कहा जाता है तब रामउजागर कहता है कि अगर सब अपने-अपने बर्तन साफ करेंगे तों हम भी तैयार है। वह हमेशा कहता है -"बदतमीजी भी मत करो और आत्मसम्मान के मामले पर झुको भी नहीं।"[1] अनुकूल आदमी से भी बढ़कर आत्मसम्मान को महत्त्व देता है।

**4.5.4.6 अहंवादी छात्र :**

भारत में सदियों से उच्च वर्ग के लोगों द्वारा निम्न वर्ग के लोगों पर अन्याय अत्याचार होते रहे हैं। उच्चवर्गीय लोगों की मानसिकता अलग ही रहती है। वे निम्न वर्ग के लोगों को हीन दृष्टि से देखते हैं। आई.आई.टी. के ज्यादातर छात्रों में यही प्रवृत्ति दिखाई देती हैं। दलित छात्र छात्रावास के जिस 'विंग' में रहते हैं उसे 'गांधी मोहल्ला','जाँघियाँ कण्टिन्जेण्ट' कहकर उच्चवर्ग के छात्र मजाक उड़ाते हैं। बाबूराम नाम का दलित छात्र सवर्ण छात्र से हाथ मिलाता है तो वह छात्र मजाक से हाथ उलट-

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 101

पुलटकर देखता है। रामउजागर मोहन की लाश पंखे से उतारता है तो सवर्ण छात्र उसकी प्रशंसा करने के बदले कहते है - "ये लोग चाहे अब न करते हो -- पर हेबिट तो हो ही जाती है। ए फेमिली ट्रेनिंग।"[1] अत: स्पष्ट है कि उच्चवर्गीय लोगों मानसिकता अच्छे कामों में भी जातीयता का रंग देती है। खन्ना जैसे उच्चवर्गीय छात्र पिछड़ी जातियों के छात्रों को रियाया के रूप में देखना चाहते हैं। वह अनुकूल के पिताजी को धमकाकर उसे घर वापस ले जाने कहता है। छात्रों के घर से आयी चिट्ठीयाँ खन्ना द्वारा पढ़ी जाने पर ही छात्रों को मिलती हैं। वह निम्न वर्ग को मद्द करनेवाली शोध-छात्रा नीलम्मा को लिखि चिट्ठी में अश्लील शब्दों का प्रयोग करके उसे धमकाता है। अत: स्पष्ट होता है कि खन्ना जैसे अहंवादी और घमंडी छात्रों मैं अभी भी उच्चवर्गी य मानसिकता शेष है।

**4.5.4.7 पाश्चात्यों का अंधानुकरण :**

अंग्रेज देश से चले गए लेकिन पीछे अपनी सभ्यता छोड़ गए। आई.आई.टी. में पढनेवाले अधिकांश छात्र अपने देश से कम विदेश से ज्यादा प्यार करते हैं। छात्र अंग्रेजी अपनी मातृभाषा की तरह तो मातृभाषा विदेशी भाषा की तरह बोलते हैं। कुछ छात्रो के लिए सिगरेट वगैरह का सेवन प्रतिष्ठा का लक्षण है तो कल्ब और डिस्कों में जाना फैशन हो गया है। आई.आई.टी. के छात्र पढ़ाई समाप्त होने के बाद देश छोड़कर विदेश जाने को प्राथमिकता देते हैं।

राजू और अनुकूल के पिता उनको देखने आते हैं तो यहाँ के अन्य छात्र उन लोगों से अग्रेंजी में ही बात करते हैं, जो इन लोगों के समझ में नहीं आती। आई.आई.टी. में जादातर छात्र अंग्रेजी के अलावा कुछ नहीं बोलतें। यहाँ पढ़ाई भी अंग्रेजी में ही होती है। सायन्स अंगेजी में,समाजशास्त्र अंग्रेजी में अगर हिंदी होती तो भी अग्रेंजी में ही होती।अत: यह स्पष्ट है कि पाश्चात्यों का अंधानुकरण करना ही आज प्रतिष्ठा का लक्षण माना जा रहा है।

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 126, 127

### 4.5.4.8 हिंदी (राष्ट्रभाषा) के प्रति दृष्टिकोण :

भाषा देश के लोगों के मध्य आदान-प्रदान का माध्यम होती है। अंग्रेज चले गए लेकिन अंग्रेजी भाषा बनी रही। अंग्रेजों का प्रभाव अनेक शिक्षा संस्थानों पर हो रहा है। आई.आई.टी. में ज्यादातर अंग्रेजी ही बोली जाती है। हिंदी में बात करनेवाले व्यक्ति को हिंदी शब्दों का पर्यायवाची अर्थ देना पड़ता है। ऐसी जगह हिंदी में बोलना एक गाली के बराबर है। हिंदी बोलनेवाले छात्र को एक लडका कहता है - "नो ब्लडी हिंदी राइटर! हिंदी लाकर इस नेशनल इन्स्टीट्यूट को बरबाद करना चाहता था। यह कोई लैंग्वेज है? इसमें केवल गालियाँ दी जा सकती हैं और सब्जी खरीदी जा सकती है। हम लोगों को इस हिंदी प्रोटोगोनिस्ट के खिलाफ जिहाद छेड़ना चाहिए।"[1] यहाँ रामउजागर जैसे कुछ ही छात्र है जो हिंदी को महत्व देते हैं। राजू नाम के लडके के पिता से अंग्रेजी बोलनेवाले छात्रों को फटकारते हुआ रामउजागर कहता है - "दुनिया में ऐसे आदमी अभी भी बाकी है जो बिना अंग्रेजी जाने जिन्दा हैं और रहना चाहते है।"[2] अत: स्पष्ट है कि जिस भाषा के जरिए देश को स्वतत्रंता मिली। जो भाषा इस देश की राष्ट्रभाषा है उसके प्रति इन उच्चशिक्षित लोगों का रवैया उचित नहीं हैं।

### 4.5.4.9 गरीब छात्र :

आरक्षण प्रावधान के तहत निम्न वर्ग को अनेक गरीब छात्रों को आई.आई.टी. में प्रवेश मिला है। उच्च वर्ग में भी कुछ छात्र गरीब है। बाबूराम जैसे गरीब छात्रों के पास जाँघिया खरीदने के लिए भी पैसे नहीं है। अनुकूल जैसे अनेक छात्र मेस मैनेजर से सूद पर रूपया लेते हैं और वजीफा मिलने पर वापस देते हैं।अत: स्पष्ट है कि संस्थान में गरीब छात्र रहते है। सरकार की तरफ से उन्हें वजीफा दिया जाता है। उसकी रक्कम बढ़ाना तथा नियमित रूप से छात्रों तक पहुँचाना आवश्यक है।सरकार की

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 119
2. वही - पृष्ठ - 147

तरफ से दलित छात्रों को नियमित शिष्यवृत्ति नहीं मिलती। मिलती भी है तो सालभर के बाद उसमें सुधार की आवश्यकता है। हर माह उन्हें छात्रवृत्ति मिल जाती तो छात्रों के सामने जो आर्थिक अभाव के कारण समस्याएँ उत्पन्न होती है वह कम हो सकती है। उनका ध्यान भी पढ़ाई में जुट जाएगा। साथ-साथ उन छात्रों के शिक्षा का स्तर भी बढ़ता जाएगा। अत: गरिब और दलित छात्रों की शिक्षा पूरी करने के हेतु उन्हे वजीफा, छात्रवृत्ति या शिष्यवृत्ति का समय पर मिलना सख्त जरूरी है।

### 4.5.5 परीक्षा व्यवस्था :

प्राचीन काल के गुरुकुल तथा आश्रम पद्धति से लेकर परीक्षा व्यवस्था प्रचलित है। छात्रों की योग्यता की जाँच करने के लिए अध्यापक विविध तकनीकों का प्रयोग करते हैं उसमें सबसे महत्वपूर्ण तकनीक परीक्षा है। साधारणत: परीक्षा तीन प्रकार की होती है -1.लिखित 2.मौखिक 3.प्रायोगिक, शिक्षण और परीक्षण दोनों साथ में चलनेवाली प्रक्रियाएँ है। परीक्षा के बिना यह ज्ञात नहीं हो सकता कि शिक्षा प्रक्रिया ठीक दिशा में चल रही हैं कि नहीं। यदि नहीं तो ऐसा क्यों हो रहा है यह देखना आवश्यक है।

प्रस्तुत उपन्यास में प्रौधोगिकी की शिक्षा का उल्लेख आया है। आई.आई.टी. साल में एक परीक्षा के बदले दो परीक्षाएँ अर्थात सेमीस्टर का आयोजन होता है। क्वीज पर क्वीज होती है जो इसे 'कम्प्लीट' करता है वही आगे चला जाता जाते हैं। अन्यथा पीछे रहने का डर हरसमय रहता हैं। इस संस्थान में हर साल आत्महत्याएँ होती है। उसके अनेक कारणो में से एक परीक्षा फल बिघड़ जाना है।

### 4.5.6 छात्रावास :

प्राचीन वैदिक कालीन शिक्षा पद्धति में छात्र गुरुकुल में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थें। मध्यकाल में 'मदरसा' में रहकर छात्र शिक्षा ग्रहण करते थे। आधुनिक काल में भी यह परंपरा जारी रही है। इस काल मे छात्र शिक्षा संस्थानों के छात्रावास में रहकर अपनी पढ़ाई पूरी करते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में प्रौधोगिकी शिक्षा संस्थान का

चित्रण किया है। अनेक छात्र इस संस्थान में पढने के लिए पुरे देश के कोने -कोने से आते हैं। वे सब संस्थान के छात्रावास में रहते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में छात्रावास का वातावरण, वहाँ के छात्रों की पढाई, आपसी संबंध आदि का चित्रण परिलक्षित होता है।

प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित आई.आई.टी. में पढ़नेवाले छात्र तथा छात्राओं के लिए अलग -अलग छात्रावास की सुविधा है। एक छात्रावास में लगभग तीन -सौ लड़के रहते हैं। हर कदम वहाँ चहल -पहल रहती है। छात्रावास में देर रात तक पढ़ाई चलती है। अनुकूल अपने पिता को लिखता है - "रात को कोई एक बजे तक पढ़ता है, कोई दो बजे तक-- कोई सवेरा ही कर देता है।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि आई.आई.टी.की पढ़ाई कितनी महत्वपूर्ण है। वह आगे लिखता है - "यह एक अनोखी संस्था है। यहाँ चौबीस घण्टों में अठारह घण्टे पढ़ाई अत्यंत जरूरी हैं। हालाँकि यहाँ भूख महत्वपूर्ण है। मौत के तुरन्त बाद भी छक के खाते हैं। पढ़ाई उससे भी ज्यादा जरूरी आज का काम कल पर नहीं टाला जा सकता। किसी का दूसरे से कोई सम्बन्ध नहीं। हम लोगों का तो बिल्कुल नहीं। असम्बन्ध ज्यादा है।"[2] छात्रावासों में चलनेवाले सारे कारनामे यहाँ भी चलते हैं। नए लड़कों की पुराने लडके 'रैगिंग' करते हैं। 'रैगिंग के बारे में उनका मानना है कि इससे शर्म खुल जाती है।अत: रैगिंग जैसी विकृत मनोवृत्ति आई.आई.टी.जैसे उच्च शिक्षा संस्थान में भी पढ़ाई करनेवाले छात्रों में भीं दिखाई देतीं है।

छात्रावास में रहनेवाले छात्र अलग-अलग गुटों में विभाजित हुए है। एस.सी./एस.टी छात्र अलग 'विंग' में, विदेश से आए छात्र अलग 'विंग' में, तो उच्चवर्गीय छात्र अलग 'विंग' में रहते है। एस.सी.एस.टी. छात्र जहाँ रहते हैं उस विंग को 'गांधी मोहल्ला' या 'जाँघियाँ कण्टिन्जेट' कहकर उनका मजाक उड़ाया जाता है। इससे छात्रावास में जातीयवाद की वृत्ति स्पष्टता से परिलक्षित होती है।

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 129
2. वही - पृष्ठ - 131

आई.आई.टी. में पढ़नेवाले लड़के तथा लड़कियों को आपस में मिलने, सम्पर्क करने के लिए कोई बंधन नहीं है। वे लोग एक-दूसरे के छात्रावास में आते-जाते रहते हैं। एक बार लडकियों के छात्रावास के दकियानूसी किस्म के वार्डन ने उनके मिलने पर प्रतिबंध लगाया तो सब छात्रों ने आंदोलन करके 'डायरेक्टर' को यह निर्णय वापस लेने पर मजबूर किया और अपना स्वतंत्रता का अधिकार बनाए रखा।

अत: लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास के द्वारा छात्रावास और छात्र-जीवन पर प्रकाश डाला हैं। छात्रावास में रहनेवाले छात्रों में रैगिंग और जाति नुसार अलग रहने की मनोवृत्ति का परिचय प्राप्त होता हैं। आधुनिकता की हवा भी छात्रावास तक पहुँची हैं। छात्र -छात्राएँ एक दुसरे से मुक्त मिलना चाहते हैं जब विरोध या प्रतिबंध लगाया जाता है तब सभी छात्र एक हो जाते हैं और प्रतिबंध हटा कर ही रह जाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि आज की युवा पीढ़ी आजाद जीवन जीना चाहती हैं लेकिन जाति व्यवस्था के परंपरागत बंधन भी उनके मन -मस्तिष्क पर आज भी बनाये हुए हैं।

**निष्कर्ष :**

मानव जीवन में शिक्षा का स्थान महत्त्वपूर्ण है। भारत में शिक्षा की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है जो आज तक जारी है। वैदिक काल में 'गुरुकुल' में शिक्षा दी जाती थी। मध्यकाल में शिक्षा के केंद्र 'मक्ताब' तथा 'मदरसा' थे आधुनिक काल में विविध आयोग, कमेटियाँ आदि के निर्देश से शिक्षा के अनेक केंद्रो का विकास हुआ। उसमें से ही एक है - आई.आई.टी. - (भारतीय प्रौद्योगिकी शिक्षा संस्थान) यह एक स्वायत्त शिक्षा संस्थान है।

देश के प्रशासन या सरकार की तरफ से पिछड़े वर्ग, निम्न जातियाँ, दलित लोग आदि के हितों के लिए आरक्षण, स्कॉलरशीप जैसे अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णय होते हैं। सच बात तो है कि जिसके हाथ योजनाओं की बागडौर है वे लोग ही भेदभावपूर्ण नीति अपनाते है। पारिणामत: दलित छात्रों को अनेक समस्याओं से संघर्ष करना पड़ता है।

आई.आई.टी. स्वायत्त शिक्षा संस्थान होने से अंतर्गत व्यवस्थापन से संबंधित निर्णय स्वतंत्रता से लिए जाते है। संस्थान से संबंधित पदाधिकारी, दलित तथा निम्न वर्ग के छात्रों का मनोबल तोड़ते हुए दिखाई देते हैं। ऐसा कर वे छात्रों में जातीयता के बल पर भेदभाव करते हैं। जो लोग निम्न वर्ग और दलित छात्रों का स्तर ऊँचा उठाने का प्रयास करते हैं, उनकी मद्द करते हैं उनपर व्यंग्य ही किया जाता है। अत: उच्च शिक्षा संस्थानों में होनेवाली ऐसी अनेक घटनाओं से जातीय द्वेष को बढ़ावा मिलता है।

आज आई.आई.टी जैसे अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान स्वार्थी प्रवृत्ति, राजनीति, जातीय भेदाभेद अहं, आंतरिक खोखलापन, पाश्चात्यों का अंधानुकरन, उच्चवर्गीय मानसिकता, रैगिंग जैसी अनेक विकृतियों से ग्रस्त दिखाई देते हैं। यहाँ के नाममात्र अध्यापक तथा छात्रों में अच्छे मानवतावादी गुण दिखाई देते हैं।

अत: संबंधित लोगों की मानसिकता में बदलाव लाना जरूरी है। इससे ही आई.आई.टी जैसी उच्च शिक्षा संस्थान की कमियाँ, दुरावस्था दूर हो सकेगी। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित शिक्षा व्यवस्था के द्वारा संघर्षरत छात्र जीवन का परिचय मिलता हैं। जहाँ खन्ना जैसे उच्च वर्ग के छात्र दलितों पर अन्याय कर उनकी शिक्षा व्यवस्था में रोडा डालते हैं वहाँ संस्थान के पदाधिकारी भी दलितों का पिछा नहीं छोडते। इतनी सारी भयावह व्यवस्था में दलित छात्र रामउजगार, अनुकूल संघर्ष करते दिखाई देते है। नीलम्मा, प्रो.मलकानी जैसे सवर्ण भी उनकी मद्द करती हैं। इन पात्रो के द्वारा यह स्पष्टता से परिलक्षित होता है कि गिरिराज किशोर उच्च आदर्श से भरे मानवतावाद के पक्षधर हैं।